श्री प्रशान्त बर्वे को वासविक पुरस्कार

श्री प्रशान्त बर्वे, प्रमुख, प्रक्रिया विकास एवं अभियांत्रिकी ग्रूप, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे को रसायन विज्ञान तथा रासायनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके द्वारा दिए गए योगदान के लिए वर्ष 2003 का वासविक पुरस्कार प्रदान करने हेतु चयन किया गया । श्री बर्वे ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान महत्त्वपूर्ण फाइन रसायनों और बल्क रसायनों हेतु अनेक अभिनव एवं कार्यक्षम प्रक्रियाएँ विकसित की हैं । इन रसायनों का या तो निर्यात होता है या विश्व में केवल कुछ थोड़ी सी कम्पनियों द्वारा इनका उत्पादन किया जाता है ।

ऐक्रीलऐमिडो टेरसियरी ब्युटाइल सल्फोनिक अम्ल (एटीबीएस) एक स्पेशलटी एकलक है जिसका प्रयोग बहुलन प्रक्रियाओं में सह-एकलक के रूप में किया जाता है 1 एटीबीएस का प्रयोग पॉली फाइबर जैसे संश्लिष्ट तंतुओं हेतु रंजक कार्यों में किया जाता है । जल में घुलनशील एकलक के रूप में एटीबीएस का प्रयोग अधिक मात्रा में तेल के उत्पादन जैसे कार्यों में होता है ।

एनसीएल के प्रक्रिया डिज़ायन एवं विकास ग्रूप में कार्यरत श्री बर्वे एवं उनके दल ने एटीबीएस बनाने की एक अभिनव प्रक्रिया विकसित की है जिसे पेटेण्ट द्वारा संरक्षित किया गया है । इस प्रक्रिया को एक किलोग्राम के उत्पादन स्तर तक बढ़ाया गया है । एक अनवरत/सतत प्रक्रिया भी विकसित की गई है । इन दोनों प्रक्रियाओं को व्यापारिक दृष्टि से लागू करने के लिए विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (वीओएल), मुम्बई को हस्तांतरित कर दिया गया है ।

यह भारत में एटीबीएस के उत्पादन का पहला संयंत्र है । पूरे विश्व में केवल एक या दो ही निर्माता एटीबीएस का उत्पादन करते हैं । श्री बर्वे के नेतृत्व में एनसीएल के दल ने संयंत्र को स्थापित करने तथा तकनीकी एवं विश्लेषिक स्टाफ को प्रशिक्षित करने में सहायता प्रदान की । एनसीएल ने लगातार एक वर्ष तक संयंत्र सम्बन्धी प्रारंभिक समस्याओं को सुलझाने में तथा अपेक्षित गुणवत्ता और वांछित उत्पादकता के साथ उत्पाद को प्राप्त करने में विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड को तकनीकी सहायता प्रदान की है । इस संयंत्र की वर्ष 2002 में वार्षिक उत्पादन क्षमता पहले 2000 टन थी जिसे अब बढ़ा कर 12000 टन प्रति वर्ष किया जा रहा है ।

विनती ऑर्गेनिक्स लिमिटेड की अवसंरचना के विस्तार के बाद यह विश्व में दूसरी सबसे बड़ी एटीबीएस उक्ष्पादक कम्पनी बन जाएगी ।

इस प्रौद्योगिकी का चयन वर्ष 2005 में सीएसआईआर प्रौद्योगिकी पुरस्कार हेतु किया गया था । भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 16 अगस्त, 2008 को श्री बर्वे को यह पुरस्कार प्रदान किया । इसके अन्तर्गत नकद राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है ।